उपसंहार

उपसंहार

पत्र-पत्रिकाएँ जनतांत्रिक मूल्यों के व्यापक प्रचार-प्रसार करने का सर्वोत्तम माध्यम होती हैं। साहित्य को भी व्यापक जनसमुदाय से जोड़ने का अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही हुआ है। साहित्य के व्यापक जनसमुदाय से जुड़ते ही उसके लक्ष्य, उसकी पक्षधरता, और उसके सीमा विस्तार में तुरंत ही बदलाव परिलक्षित किया जा सकता है। साहित्य का सीमा-विस्तार और रूप वही नहीं रह जाता है, जो पूर्व में था। नवीनता का आग्रह स्पष्टतः यहाँ दिखाई पड़ने लगता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि, साहित्य के विकास को तीव्रतर करने में पत्र-पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यही कारण है कि पत्र-पत्रिकाओं के जन्म के साथ ही हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में साहित्य के विविध और इतने नवीनतम रूप दिखाई पड़ते हैं। हिंदी साहित्य के विभिन्न विधाओं को जन्म देने और उसकी विधाओं के विकास में 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चंद्र चंद्रिका', 'ब्राह्मण', 'हिंदी प्रदीप', 'आनंदकादंबिनी', नागरी प्रचारिणी पत्रिका', 'सरस्वती', 'सुदर्शन', 'समालोचक', (1902) 'छत्तीसगढ़ मित्र', 'हंस', 'प्रभा', 'मतवाला', 'कल्पना', 'धर्मयुग', 'आलोचना', 'सारिका', 'पूर्वग्रह', और 'समालोचक' आदि पत्रिकाओं का अन्यतम योगदान रहा है। यदि ध्यान दिया जाए तो आधुनिक हिंदी निबंध, कहानी, नाटक तथा गद्य-साहित्य की अन्यान्य विधाओं की भाँति हिंदी में आलोचना का आरंभ भी पहले-पहल 'हिंदी प्रदीप' और 'आनंद कादंबिनी' जैसी पत्रिकाओं की साहित्यिक बहसों के माध्यम से ही हुआ। स्पष्ट है कि पत्र-पत्रिकाएँ साहित्य की विभिन्न विधाओं के उद्‌भव एवं विकास में महत्त्वपूर्ण साधन रही हैं। उनका विशिष्ट एवं ऐतिहासिक अवदान रहा है।

ध्यातव्य है कि, हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में साहित्य की विविध विधाओं एवं अन्य समसामयिक साहित्यिक गतिविधियों पर केंद्रित पत्रिकाएँ तो बहुत रहीं हैं, किंतु सिर्फ-व-सिर्फ

आलोचना के विषय-क्षेत्र पर केंद्रित पत्रिका का हिंदी में अभाव रहा है। इस संदर्भ में शिवदान सिंह चौहान का योगदान इसलिए सर्वाधिक उल्लेखनीय है कि उन्होंने राजकमल प्रकाशन संस्थान के सहयोग से हिंदी में आलोचना विधा की 'आलोचना' त्रैमासिक (पत्रिका) की स्थापना की। इस पत्रिका की स्थापना द्वारा आलोचना की पत्रिका की अभाव की पूर्ति हुई। इस प्रकार शिवदान सिंह चौहान को 'आलोचना' पत्रिका के संस्थापक-संपादक होने का गौरव प्राप्त है। शिवदान सिंह चौहान के संपादन में अभी दो वर्ष पूरे भी नहीं हुए थे कि आलोचना का संपादन एक संपादन-समिति के हाथों में चला गया जिसमें डॉ0 धर्मवीर भारती', डॉ0 रघुवंश', डॉ0 ब्रजेश्वर वर्मा, श्री विजयदेवनारायण ाही जैसे आलोचक-रचनाकार थे। इस संपादक मंडल के तीन वर्ष के उपरांत इसका संपादन आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने किया। इसके कुछ वर्षों बाद इसका संपादन पुनः शिवदान सिंह चौहान के पास पहुँचा। इनके हाथों से 'आलोचना' का संपादन नामवर सिंह के दायित्व में आया। इस प्रकार स्पष्ट है कि 'आलोचना' पत्रिका अपनी स्थापना के बाद कई संपादकीय विवेकों से होकर गुजरी। प्रत्येक संपादक ने अपने संपादकीय विवेक द्वारा 'आलोचना' को हिंदी-आलोचना की एक महत्त्वपूर्ण पत्रिका के रूप में स्थापित करने में अपना बहुमूल्य योग दिया। यद्यपि 'आलोचना' पत्रिका के प्रकाशन के बाद हिंदी आलोचना की कई पत्रिकाएँ संपादित-प्रकाशित होती रहीं, किंतु उन पत्रिकाओं के प्रकाशन के बावजूद 'आलोचना' पत्रिका अपने संपादकीय विवेक और गूढ़-गंभीर कार्यों के लिए ही सर्वाधिक चर्चित रही है, जिससे हिंदी आलोचना की उत्कृष्ट पत्रिका के रूप में उसका नामोल्लेख किया जाता है। इसके लिए 'आलोचना' के विभिन्न 'संपादकीय विवेकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। यहाँ स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है कि 'आलोचना' पत्रिका का संपादन कई संपादकों ने किया है, और मेरा शोधकार्य मुख्य रूप से 'नामवर सिंह द्वारा संपादित 'आलोचना' पत्रिका का हिंदी आलोचना के विकास में क्या योगदान' रहा है, इस विषय पर केंद्रित है। इस प्रबंध में इसी विषय पर ही मुख्यतः केंद्रित होकर विचार का प्रयास

किया गया है। किंतु, नामवर सिंह का संपादकीय विवेक किस प्रकार अपने पूर्व-संपादकों से भिन्न है, इस पर भी स्थान-स्थान पर विचार किया गया है। इस प्रबंध के छठे अध्याय में नामवर सिंह के संपादकीय विवेक पर अलग से विस्तार से विचार किया गया है। नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका के पूर्व सोलह वर्षों के अंतराल में चार बार 'संपादकीय फेरबदल' हुआ। इस बीच वह कई बार बाधित रही, उसके प्रकाशन में कई अवरोध आए। किंतु जबसे नामवर सिंह ने 'आलोचना' का संपादन-दायित्व अपने हाथों में लिया। उन्होंने उसका संपादन निरंतर बिना बाधा के लगभग चौबीस वर्षों तक किया। (अर्थात् अप्रैल-जून 1967 से अप्रैल-जून 1990 ई.) तक की दीर्घ अवधि में 93 अंक संपादित किए और 'आलोचना' का प्रकाशन प्रबंधकीय फेरबदल के कारण पुनः बंद हुआ।

इस संदर्भ में रेखांकित करने योग्य तथ्य यह है कि नामवर सिंह के संपादन के पूर्व 'आलोचना' के संपादकों का संपादन का काल सबसे अस्थिर, उठापटक और अल्पायुवाला था, वस्तुतः इसे आलोचना के प्रकाशन का प्रथम चरण कहा जाना ही समीचीन है और इसकी अवधि 1951-1967 ई. तक मानी जानी चाहिए। इसके उपरांत नामवर सिंह के संपादन में 'आलोचना' 1967-1990 ई. तक संपादित होती रही है, इसलिए इस दीर्घ अवधि को 'दूसरा चरण' कहना चाहिए। इस दीर्घ अवधि तक 'आलोचना' की पत्रिका का संपादन करना स्वयं उस संपादक के संपादकीय विवेक की महत्ता को प्रकट करता है। यद्यपि नामवर सिंह के संपादन से पूर्व, पहले चरण के संपादकों ने 'आलोचना' को हिंदी आलोचना की एक महत्त्वपूर्ण पत्रिका के रूप में स्थापित किया था, किंतु नामवर सिंह ने उसका संपादन करते हुए उसके महत्त्व को ऐतिहासिक एवं चिरस्थायी बना दिया। उसे हिंदी आलोचना की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका के रूप में स्थापित किया। नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका को लेकर इस अध्ययन में मेरी सीमा यह रही है कि उनसे 'पूर्व संपादकों' पर अलग से किसी अध्याय के रूप में व्यवस्थित ढंग से विचार नहीं किया गया है, बल्कि

आवश्यकतानुरूप अलग-अलग अध्यायों में नामवर सिंह की संपादन-कला से भिन्नता को स्पष्ट करने में उनका विवेचन-विश्लेषण किया गया है।

दूसरी बात यहाँ स्पष्ट करना है कि 'आलोचना' पत्रिका से पूर्व हिंदी आलोचना विधा पर केंद्रित कोई उल्लेखनीय पत्रिका दिखाई नहीं पड़ती है, जिसको सिर्फ-व-सिर्फ आलोचना विधा के लिए ही प्रकाशित किया गया हो। इस संदर्भ में कोई महत्त्वपूर्ण नाम मेरे देखने में नहीं आया है, जिनका प्रकाशन केवल हिंदी आलोचना के क्षेत्र में योगदान के लिए किया गया हो और वह उल्लेखनीय रही हो। यदि कोई ऐसी पत्रिका रही है, तो यह मेरी दृष्टि की सीमा कही जाएगी। किंतु यह प्रश्न सीधे-सीधे इस शोधकार्य से नहीं जुड़ा हुआ है, इसलिए इससे मेरे निष्कर्षों पर कोई अंतर नहीं पड़ेगा।

यहाँ यह सूचित करना अत्यावश्यक है कि नामवर सिंह ने 'आलोचना' का संपादन करते हुए तीन सहयोगियों की सहायता ली थी। जिनमें 'विष्णु खरे', जिनका नाम पत्रिका पर सह-संपादक के रूप में प्रकाशित नही हुआ था। दो अन्य सहयोगियों के रूप में 'नंदकिशोर नवल', और परमानंद श्रीवास्तव का नाम 'सह-संपादक' के रूप में प्रकाशित होता था। इन सह-संपादकों का 'आलोचना' पत्रिका को प्रकाशन संपादन में क्या योगदान है इस पर विषय-सीमा के विस्तार भय से विचार नहीं किया गया है। यहाँ केवल नामवर सिंह का संपादकीय विवेक और 'आलोचना' पत्रिका का उनके द्वारा संपादन और हिंदी आलोचना के विकास में उसके योगदान की चर्चा की गई है।

नामवर सिंह के संपादन में 'आलोचना' पत्रिका के आते ही जो सबसे बड़ा काम पत्रिका के पक्ष में रहा, वह उसके दीर्घ अवधि तक एक संपादक द्वारा संपादन के रूप में स्थिरता प्राप्त करना था। नामवर सिंह के संपादन से पूर्व 'आलोचना' कई संपादकीय विवेकों से गुजर चुकी थी, प्रकाशन भी बीच-बीच में बाधित हुआ था। इस प्रकार नामवर सिंह के संपादन से पूर्व का काल यानी पहला चरण अस्थिरतायुक्त कई तरह से व्यवधानवाला एवं 'संपादकीय फेरबदल' वाला था। नामवर सिंह

के संपादन में आते ही 'आलोचना' को इस प्रकार की अस्थिरता से मुक्ति मिली और वह बिना किसी बाधा के संपादित प्रकाशित हो सकी, जिसके कारण ही हिंदी आलोचना को विकसित करने में वह अपनी निर्णायक भूमिका का निर्वाह कर सकी। छठे अध्याय में इन्हीं सूत्रों को समझने का प्रयास किया गया है।

नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका का वैचारिक आधार मार्क्सवादी-साहित्य- कला चिंतन रहा है, उसने साहित्य की आधुनिकतावादी, कलावादी और व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों की नकारात्मक प्रवृत्तियों से सीधे संघर्ष किया है। इसका सीधा टकराव 'पूर्वग्रह' पत्रिका की या उस जैसी विचारधारा की पोषक पत्र-पत्रिका से रहा है। नामवर सिंह ने अपने संपादन में 'आलोचना' को सिर्फ कलावादी या व्यक्तिवादी आदि प्रवृत्तियों के ही विरोध का माध्यम नहीं बनाया है, बल्कि साहित्य के प्रति किसी तरह के उग्रवामपंथी रुझान और स्थूल समाजशास्त्रीयता का भी विरोध उन्होंने 'आलोचना' के माध्यम से किया है।

नामवर सिंह ने अपने संपादन में 'आलोचना' के माध्यम से मार्क्सवादी साहित्य और कला-चिंतन के वैचारिक आधार को हिंदी आलोचना में और सुदृढ़ करते हैं। किंतु उनका मार्क्सवादी साहित्य-चिंतन चौथे-पाँचवे दशक के शिवदान सिंह चौहान और रामविलास शर्मा वाला मार्क्सवादी चिंतन नहीं है, और न ही चौथे-पाँचवे दशक के स्तालिनकालीन पश्चिमी मार्क्सवादी साहित्य चिंतन है, जो उस दौर के प्रमुख मार्क्सवादी चिंतक 'हेनरी बारबूस', 'राल्फ फाक्स' आदि के यहाँ दिखाई पड़ता है। इस चौथे-पाँचवें दशक का मार्क्सवादी साहित्य चिंतन अधिकांश पार्टीबद्ध चिंतन था, इस समय का मार्क्सवादी साहित्य-चिंतन और आलोचना में मार्क्सवादी अवधारणाओं को फिट करने का हरसंभव प्रयास किया जा रहा था। जो उस सिद्धांत के चौखटे में फिट नहीं बैठ रहा था, वह प्रतिक्रियावादी सिद्ध किया जा रहा था। वहाँ मार्क्सवादी अध्ययन पद्धति का प्रयोग नहीं किया जा रहा था। इस प्रकार एक 'यांत्रिक मार्क्सवादी' की रूढ़िबद्ध चिंतन-पद्धति मार्क्सवादी कला

साहित्य-चिंतन के नाम पर चल रही थी, यह यांत्रिक मार्क्सवाद के कारण जहाँ पश्चिम में एफ. आर. लीविस की नई समीक्षा पद्धति की विजय हुई, वहीं हिंदी आलोचना में मार्क्सवाद के प्रवर्तक शिवदान सिंह चौहान के हाथ से 'आलोचना' का संपादन आधुनिकतावादी, अस्तित्त्ववादी चिंतकों धर्मवीर भारती आदि के 'संपादन-समूह' के हाथ में आ गई थी। यहाँ मार्क्सवादी आलोचना भी यहाँ अपने रूढ़िबद्ध रूप में ही विद्यमान थी। नामवर सिंह ने अपने आलोचनात्मक विवेक के माध्यम से मार्क्सवाद को यांत्रिक और रूढ़िबद्ध चौखटे से बाहर निकालने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। उसे सर्जनात्मक मार्क्सवादी चिंतन का रूप देने का कार्य किया। इस कार्य में उनके प्रेरणा-स्रोत पश्चिम में मार्क्सवाद की नई बहसों के प्रवर्तक 'जार्ज लूकाच', 'ब्रेख्त', 'बाल्टर बेंजामिन', 'रेमंड विलियम्स', 'अंतोनियों ग्राम्शी' आदि रहे हैं। नामवर सिंह ने मार्क्सवादी आलोचना और साहित्य-चिंतन की नई बहसों, नवीन प्रवृत्तियों से हिंदी आलोचना को परिचित कराने का काम 'आलोचना' पत्रिका का संपादन करते हुए किया। उन्होंने मार्क्सवादी साहित्य-चिंतन की 'दूसरी परंपरा' के चिंतन से हिंदी आलोचना के पाठकों का परिचय कराया। इस दूसरी परंपरा के मार्क्सवादी चिंतकों पर 'आलोचना' पत्रिका के विशेषांक निकाले, उनके लेखों, टिप्पणियों, साक्षात्कारों आदि का अनुवाद करवाकर उन्हें 'आलोचना' में प्रकाशित किया। उन पर संपादकीय टिप्पणियाँ लिखीं और उनके मन्तव्यों को स्पष्ट करने के लिए उनके अलग-अलग विषयों पर लिखे गए लेखों को 'आलोचना' में बार-बार प्रकाशित किया। उसे हिंदी पाठकों से परिचित कराया। हिंदी की मार्क्सवादी आलोचना को समृद्ध करने में अपना बहुमल्य योगदान दिया। 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से मार्क्सवादी चिंतन की विरोधी उन सभी प्रवृत्तियों से निरंतर संघर्ष करने का कार्य किया। आज हिंदी की मार्क्सवादी आलोचना जिस रूप में दिखाई पड़ रही है, इसके विकास में नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका का अन्यतम योगदान है। 'आलोचना' पत्रिका ही वह माध्यम है, जो इतनी दीर्घ-अवधि तक मार्क्सवादी साहित्य-चिंतन की वैचारिक पृष्ठभूमि पर खड़ी

रही, और विभिन्न प्रवृत्तियों से हिंदी की मार्क्सवादी आलोचना का उन्नयन करने का कार्य करती रही। वस्तुतः नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से हिंदी की मार्क्सवादी साहित्य-चिंतन को विकसित करने का कार्य किया गया और मार्क्सवादी आलोचना को उसकी नई बहसों से जोड़ने का कार्य भी हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि हिंदी की मार्क्सवादी आलोचना हिंदी आलोचना की केंद्रीय धरा के रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित है। ये तथ्य और मान्यताएँ ही अपना स्वरूप किस प्रकार ग्रहण कर सकी हैं इन्हें इस प्रबंध के 'मार्क्सवादी आलोचना की नई बहसें और 'आलोंचना' शीर्षक द्वितीय अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका में हिंदी में होनेवाली अन्य साहित्यिक बहसों को भी स्थान मिला है। 'आलोचना' में विभिन्न साहित्यिक मुद्दों और प्रश्नों पर नामवर सिंह ने कई परिसंवाद आयोजित किए। जिनमें 'कविता और राजनीति', रोमांटिक बनाम आधुनिक', 'युवा लेखन पर एक बहस', 'आज के युग में प्रगतिशीलता', 'आलोचना की भाषा' आदि प्रमुख विषय हैं। इसके अतिरिक्त 'आलोचना' में 'साहित्य के समाजशास्त्रीय चिंतन' को प्रस्तावित करने का काम भी 'आलोचना' पत्रिका के ही माध्यम से किया गया है, जिसे इस शोध-प्रबंध में साहित्यिक बहस के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'हिंदी नवजागरण की संकल्पना पर बहस' शीर्षक अध्ययन में हिंदी नवजागरण की संकल्पना पर विचार प्रस्तुत किया गया है। भाषिक आलोचना व शैली विज्ञान जैसी प्रवृत्ति पर 'आलोचना' ने सबसे पहले अपना ध्यान केंद्रित किया और उसे हिंदी आलोचना में पहले-पहल प्रस्तुत करने का कार्य किया। उपर्युक्त साहित्यिक बहसों और विवेच्य सभी प्रवृत्तियों ने हिंदी आलोचना को किस प्रकार प्रभावित किया है, और हिंदी आलोचना को विकसित करने में उनका क्या योगदान है, इस विषय पर 'नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' में प्रमुख साहित्यिक मुद्दे और बहसें' शीर्षक से प्रथम अध्याय में विस्तृत चर्चा की गई है।

हिंदी में आलोचना विधा की शुरूआत से ही आलोचना की जिन दो प्रवृत्तियों को स्पष्टतः

लक्षित किया जा सकता है, उसमें एक प्रवृत्ति 'समकालीन रचनाशीलता से सक्रिय संवाद' की है; तथा दूसरी प्रवृत्ति अपनी परंपरा का अन्वेषण और उसके मूल्यांकन की रही है। हिंदी आलोचना का सर्वांश इन्हीं दो आधारों पर टिका हुआ है। आगे चलकर एक और प्रवृत्ति विकसित हुई वह है किसी 'आलोचक की आलोचना का सम्यक मूल्यांकन'। 'आलोचना' पत्रिका का इन क्षेत्रों में अन्यतम योगदान है, जिससे हिंदी आलोचना अपना स्वरूप विकसित कर सकी है।

अपनी सांस्कृतिक विरासत अथवा परंपरा के मूल्यांकन के लिए कौन-सी दृष्टि अपनायी जाए इसे नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका में स्पष्ट लक्षित किया जा सकता है। नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से परंपरा को श्रद्धाविगलित, अंधश्रद्धा, युक्त पूज्यभाव की प्रवृत्ति, और वर्तमान समस्या का हल अतीत में ढूँढनेवाली प्रवृत्ति, पारंपरिक मूल्यों को वर्तमान जीवन पर लागू करनेवाली प्रवृत्ति का जमकर विरोध किया। उन्होंने परंपरा की असंगतियों को त्यागकर उसे अत्यंत गौरवमयी बनाकर प्रस्तुत करनेवाली प्रवृत्ति का प्रतिकार किया है। नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से एक ऐसी दृष्टि विकसित करने का प्रयत्न किया जो अपने अतीत अथवा अपनी सांस्कृतिक विरासत को उसके सांस्कृतिक संदर्भों मे, युगीन सीमाओं तथा उसके अंतर्विरोधों के बीच रखकर उसके मूल्यांकन का प्रयास करती है, जिससे अतीत की अतीतता को सुरक्षित रखते हुए उसकी 'विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता' को स्पष्ट किया जा सके, जिससे परंपरा की सही छवि प्रस्तुत की जाए। नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका ने भारतेंदु हरिश्चंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, तथा हिंदी नवजागरण और उसके अग्रदूतों का जो मूल्यांकन प्रस्तुत करने का कार्य किया उसमें इसी आलोचनात्मक रुख का परिचय दिया गया है। 'आलोचना' पत्रिका ने अपनी परंपरा के मूल्यांकन के प्रति जिस आलोचनात्मक विवेक का परिचय दिया है, वह हिंदी नवजागरण और उसके अग्रदूतों एवं परंपरा का समग्रता में अध्ययन करने का मार्ग प्रशस्त करती है। इस प्रकार, नामवर सिंह द्वारा संपादित 'आलोचना' पत्रिका में परंपरा

के मूल्यांकन के प्रति जिस दृष्टि को विकसित करने का प्रयत्न किया गया है, वह न केवल हिंदी आलोचना के क्षेत्र में बल्कि किसी भी संस्कृति, परंपरा और अतीत की जातीय चेतना के मूल्यांकन के क्षेत्र में अत्यंत ही मूल्यवान देन है। 'आलोचना' पत्रिका ने परंपरा के मूल्यांकन के सवाल को गंभीरता से ग्रहण किया। उसने न केवल अपनी मूल्यवान सांस्कृतिक विरासत की सही छवि को बराबर आलोकित करने का प्रयास किया, बल्कि सांस्कृतिक विरासत की प्रतिगामी-प्रतिक्रियावादी ताकतों के संगठित अभियान से रक्षा भी करती रही है। परंपरा को उसके समग्र रूप में लेते हुए, उसके प्रति 'आलोचनात्मक रुख' अपनाते हुए, उसने गौरवशाली जीवंत-परंपरा को विकसित और पुष्ट करने के लिए कृत संकल्प रचनाकारों-विचारकों की जागरूक पीढ़ी को तैयार भी किया है। नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से जिस आलोचनात्मक विवेक को जाग्रत करने का प्रयास किया है उससे हिंदी आलोचना में जनतांत्रिक और प्रगतिशील चिंतन के एक स्वस्थ वातावरण को निर्मित करने का कार्य किया। परंपरा के मूल्यांकन के संदर्भ में बिना इस दृष्टि से टकराए आगे नही बढ़ा जा सकता है।

परंपरा के मूल्यांकन के संदर्भ में दूसरी परंपराओं के महत्त्व को भी स्वीकार करने का उद्यम 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से हुआ है। नामवर सिंह द्वारा संपादित 'आलोचना' पत्रिका में ही पहले-पहल 'दूसरी परंपरा की खोज' का प्रश्न उठाया गया। नामवर सिंह ने अपने संपादकीय और लेखों के माध्यम से यह संकल्पना प्रस्तुत की, कि प्रभुत्त्वशाली परंपरा की प्रधान प्रवृत्तियों के कारण अन्य लघुधाराएँ, व परंपराएँ दबा दी जाती हैं, या उन्हें हाशिए पर डाल दिया जाता है। 'आलोचना' पत्रिका उन अन्य दूसरी परंपराओं की खोज का माध्यम बनती हैं। इस प्रकार दूसरी परंपरा की खोज की संकल्पना 'आलोचना' पत्रिका की परंपरा के मूल्यांकन के संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इसके माध्यम से दूसरी परंपराओं की महत्ता को स्थापित किया जा सके। हाशिए पर पड़ी उन परंपराओं और धाराओं को पुनर्जीवन दिया जा सके। इस प्रकार, नामवर सिंह ने अपने संपादन के

द्वारा 'दूसरी परंपरा की खोज' जैसी अवधारणा हिंदी आलोचना को दी, जिसके माध्यम से प्रभुत्त्वशाली परंपरा के साथ अन्यान्य धाराओं को समान महत्त्व देने की प्रवृत्ति को विकसित किया जा सके। उसे नगण्य समझते हुए अनावश्यक न समझा जाए। इन्हीं दृष्टियों का विस्तृत-विवेचन तृतीय अध्याय के परंपरा का मूल्यांकन और 'आलोचना' शीर्षक अध्ययन में प्रस्तुत किया गया है।

'आलोचना' पत्रिका को नामवर सिंह ने वास्तव में समकालीन रचनाशीलता से सक्रिय संवाद करती हुई पत्रिका के रूप में विकसित किया। नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि 'आलोचना' की सार्थकता अपनी समकालीन रचनाशीलता का मूल्यांकन प्रस्तुत करने में है। समकालीन रचनाशीलता से जुड़कर ही कोई आलोचना, आलोचना कहलाने की अधिकारी है। चतुर्थ अध्याय में समकालीन रचनाशीलता और आलोचना के क्षेत्र में 'आलोचना' पत्रिका का क्या योगदान रहा है। इसे विस्तार से स्पष्ट करने का कार्य किया गया है। नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका की अन्यतम विशेषता समकालीन कवियों की काव्य रचनाओं के प्रकाशन के रूप में देखा जा सकता है। 'आलोचना' पत्रिका मूलतः आलोचना की पत्रिका रही है। किंतु इसके प्रत्येक अंक में अपने समय की युवा कवियों या प्रमुख-प्रतिनिधि कवियों की काव्य-रचनाएँ भी प्रकाशित होती थीं। इसके अंतर्गत सिर्फ हिंदी की काव्य-रचनाएँ ही प्रकाशित नहीं होती थीं, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त रूसी, स्पेनिश, जर्मन आदि भाषा की प्रमुख रचनाओं का अनुवाद भी प्रकाशित किया जाता था। 'आलोचना' में प्रकाशित होनेवाले प्रमुख हिंदी कवियों के नाम यदि देखे जाएँ तो हमें 'धूमिल', शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, केदारनाथ सिंह, लीलाधर जगूड़ी, मंगलेश डबराल, देवी प्रसाद मिश्र, बोधिसत्व, सुल्तान अहमद, पंकज सिंह, कमलेश, विजयदेव नारायण साही, आदि की काव्य रचनाएँ प्रकाशित हैं।

नामवर सिंह ने 'आलोचना' का संपादन करते हुए समकालीन रचनाशीलता के संदर्भ में कई

महत्त्वपूर्ण मूल्यांकन प्रस्तुत किए हैंसाठोत्तरी पीढ़ी की रचनाशीलता को स्पष्ट करने का प्रयास उनमें से एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। 'युवा लेखन पर बहस' शीर्षक से परिसंवाद आयोजित कर साठेत्तरी पीढ़ी की मानसिक बुनावट और उनकी रचनाशीलता और उसकी पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने का कार्य किया गया है। इसी प्रकार 'समकालीन कविता' यानी आपातकालोत्तर कविता के पक्ष-विपक्ष उसकी रचनाशीलता को स्पष्ट करने का प्रयास 'आलोचना' पत्रिका के कई अंकों में प्रकाशित लेखों के माध्यम से किया गया है। समकालीन कविता का संबंध नागार्जुन और त्रिलोचन की कविताओं से जोड़कर देखने का प्रयास भी 'आलोचना' के अंकों में किया गया है।

'आलोचना' पत्रिका ने समकालीन रचनाशीलता के कैनन में जो परिवर्तन किया उसने हिंदी आलोचना में स्थापित कवियों के कैनन में ही बदलाव प्रस्तुत किए। 'आलोचना' पत्रिका में गजानन माधव मुक्तिबोध पर विशेषांक आयोजित कर, मुक्तिबोध को नई कविता के केंद्र में स्थापित किया। 'धूमिल' की महत्ता को स्थापित करने का काम किया। नागार्जुन और त्रिलोचन पर विशेषांक आयोजित कर उनकी जनवादी चेतना और लोकधर्मी प्रकृति से हिंदी पाठकों को परिचित कराया। 'आलोचना' के विशेषांक से पूर्व हिंदी पाठक नागार्जुन और त्रिलोचन की काव्य-रचनाओं से परिचित थे किंतु सबसे पहले उन पर विशेषांक आयोजित कर उन्हें समकालीन कवियों की रचनाधर्मिता से जोड़ने का कार्य किया। 'आलोचना' के माध्यम से नामवर सिंह उन्हें दूसरी परंपरा की लोकधर्मी धारा से संबद्ध करके उनके महत्त्व को स्थापित किया। इसके अतिरिक्त नामवर सिंह निर्मल वर्मा की विचारधारा का जमकर खंडन करते हुए भी, उनके कथाकार रूप के वैशिष्ट्य उद्घाटन करने के लिए एक विशेषांक का आयोजन करते हैं।

नामवर सिंह संपादित 'आलोचना' पत्रिका ने हिंदी कथालोचना के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। समकालीन उपन्यास पर 'आलोचना' का पूरा एक विशेषांक ही प्रकाशित किया गया है। हिंदी कथालोचना पर 'आलोचना' में जिनके सर्वाधिक लेख प्रकाशित हैं, उनमे विजय

मोहन सिंह, मधुरेश और गोपालराय उल्लेखनीय हैं। 'आलोचना' में कथालोचना को लेकर बार-बार प्रकाशित होने से हिंदी पाठकों के सम्मुख इनकी छवि कथालोचक की बनी। यह हिंदी आलोचना को 'आलोचना' पत्रिका की महत्त्वपूर्ण देन है।

इसी प्रकार हिंदी नाट्य-नाटक संबंधी अध्ययन पर मनोहर काले, नरनारायण राय, सत्येंद्र कुमार तनेजा जैसे विद्वानों के कई लेख 'आलोचना' में प्रकाशित हैं। इन विद्वानों के लेखों और शोधपूर्ण अध्ययनों से हिंदी पाठक नाटक संबंधी विविध परिदृश्य से परिचित हो सके। नाट्य-नाटक संबंधी अध्ययन के क्षेत्र में ये विद्वान व्यवस्थित रूप से 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से हिंदी पाठकों के समक्ष उपस्थित हुए।

समकालीन रचनाशीलता का पूरा परिचय उस समय की पुस्तक-समीक्षाओं से किस प्रकार ज्ञात हो, इस प्रवृत्ति का विकास 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से ही हुआ। नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका में प्रकाशित पुस्तक-समीक्षओं को 'पुस्तक परिचय' के रूढ़ स्वरूप से मुक्त कर वैचारिक संघर्ष की चेतना से युक्त किया। यहाँ पुस्तक-समीक्षा के माध्यम से वैचारिक संघर्ष की आधारशिला निर्मित करने का कार्य किया। यह बहस किसी पुस्तक की समीक्षा पर स्वंय पुस्तक लेखक और समीक्षक के बीच साहित्यिक बहस की विषय वस्तु बनती है, या कोई पाठक अपनी प्रतिक्रिया देते हुए देखा जा सकता है। इसके लिए नामवर सिंह ने अपने संपादकीय विवेक का परिचय देते हुए दो पद्धतियाँ विकसित की हैं एक पद्धति तो यह है कि एक साहित्यिक कृति पर दो-दो अथवा तीन-तीन समीक्षकों की समीक्षाएँ प्रस्तुत की गई हैं या एक ही समीक्षक से तीन-तीन, चार-चार पुस्तकों की समीक्षाएँ एक साथ प्रस्तुत की गई हैं, जिससे कृति अथवा समीक्षक की समस्त प्रतिभाओं और संभावनाओं को पाठकों के समक्ष रखा जा सके। इस प्रकार 'आलोचना' पत्रिका ने अपनी पुस्तक-समीक्षाओं को पुस्तक परिचय के रूढ़ अर्थ से मुक्तकर उसे वैचारिक संघर्ष की चेतना के निर्माण के रूप में प्रस्तुत किया। यह हिंदी आलोचना को 'आलोचना' पत्रिका की महत्त्वपूर्ण देन

कही जा सकती है। समकालीन रचनाशीलता और 'आलोचना' का क्या संबंध रहा है, इसे चतुर्थ अध्याय में विस्तार से विवेचित-विश्लेषित किया गया है।

हिंदी आलोचना में आलोचकों के कैनन में पहले आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नंददुलारे वाजपेयी और डॉ0 नगेंद्र आदि को ही रखा जाता था, किंतु नामवर सिंह ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की षष्ठिपूर्ति पर एक परिसंवाद आयोजित किया, उन पर एक स्मृति अंक आयोजित कर उन्हें हिंदी आलोचना के कैनन में स्थापित किया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की जन्मशती पर दो-दो अंक संपादित किए और डॉ0 रामविलास शर्मा के सत्तरवें जन्मदिवस के अवसर पर विशेषांक आयोजित कर यह स्पष्ट किया कि हिंदी आलोचना का वास्तविक कैनन इन महानुभावों से बनता है। हिंदी आलोचना आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और डॉ0 रामविलास शर्मा के पद्चिह्नों पर चलकर विकास करेगी। इस कैनन से व्यवस्थित ढंग से बोध करवाने का काम नामवर सिंह ने ही 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से किया। यह हिंदी आलोचना के विकास में 'आलोचना' पत्रिका का अन्यतम योगदान है। इस प्रकार 'आलोचना' के विशेषांक किन रचनाकारों और आलोचकों पर आयोजित है और उनका महत्त्व क्या है. इसे पाँचवें अध्याय में देखा जा सकता है। नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से साहित्य अध्ययन की नवीनतम प्रवृत्तियों से हिंदी पाठकों को परिचित कराने का कार्य किया। 'आलोचना' पत्रिका में सबसे पहले 'शैलीविज्ञान' जैसी नवीनतम साहित्यिक अध्ययन प्रवृत्ति को प्रस्तुत किया गया है। वहीं 'साहित्य' का समाजशास्त्रीय चिंतन' की प्रस्तावना को भी पहले-पहल 'आलोचना' पत्रिका के पटल पर ही देखा जा सकता है। उत्तर-आधुनिकता और संरचनावाद, आदि प्रवृत्तियों पर हिंदी में सबसे पहला लेख 'आलोचना' पत्रिका में ही प्रकाशित हुआ था। साहित्य का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन किस प्रकार हो सकता है, उसकी विभिन्न प्रवृत्तियाँ क्या हो सकती हैं इस विषय पर कई लेख 'आलोचना' में प्रकाशित हैं। हिंदी आलोचना की सबसे जीवंत और दीर्घ समय तक चलते रहले वाली बहस''हिंदी नवजागरण की संकल्पना'' और 'दूसरी

साहित्य के सीमित क्षेत्र से निकाल कर उसे सभ्यता समीक्षा की सांस्कृतिक प्रक्रिया से जोड़ने का काम किया। इसके लिए उनका आलोचनात्मक विवेक का महत्त्वपूर्ण अवदान है, जिसके कारण उनके संपादकीय विवेक को अत्यंत विस्तृत आधार मिला। इस प्रकार नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका का संपादन करते हुए आलोचना के स्वरूप को ही बदल देने का काम किया। अब आलोचना में प्रवृत्त किसी आलोचक के लिए केवल साहित्य का ज्ञान अपेक्षित नहीं है, बल्कि सम्यक इतिहास-बोध, वैज्ञानिक दृष्टि, सांस्कृतिक चेतना संपन्न होने के साथ-साथ साहित्य की परंपराओं का ज्ञान और विविध ज्ञान के अनुशासनों की सम्यक जानकारी के साथ तीव्र अन्वीक्षण बुद्धि और रसग्रहिणी प्रज्ञा की अपेक्षा होगी। अतः नामवर सिंह के संपादन के माध्यम से 'आलोचना' पत्रिका की सामग्री ने इस प्रकार से हिंदी पाठकों और आलोचकों के आलोचनात्मक विवेक के निर्माण का कार्य किया है। इसके माध्यम से हिंदी आलोचना के लिए ऐसा बौद्धिक वातावरण निर्मित हुआ कि आगामी आलोचना का सर्वोत्तम उसी वातावरण की देन होगी।

'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से हिंदी आलोचना में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान हिंदी की 'आलोचना की भाषा' का विकास के रूप में देखा जा सकता है। नामवर सिंह ने 'आलोचना' का संपादन करते हुए हिंदी की प्रगतिशील आलोचना के विकास के लिए जो लड़ाई लड़ी हैं, उसमें हिंदी की अपनी 'आलोचना की भाषा' का क्या रूप हो यह मुद्दा भी शुरू से जुड़ा रहा है। हमारी दृष्टि में 'आलोचना' पत्रिका ने हिंदी 'आलोचना' की भाषा' के निर्माण में अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया है। हिंदी आलोचना के सम्मुख 'आलोचना' पत्रिका में प्रयुक्त भाषा ही हिंदी आलोचना की सही व जातीय भाषा हो सकती है।

इसके अतिरिक्त, 'आलोचना' पत्रिका में कई प्रतिभाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहित किया, वहीं कुछ आलोचकों और चिंतकों को बार-बार छाप कर उनकी प्रतिभा से हिंदी आलोचना जगत को परिचित कराया। आज हिंदी में जितने बड़े आलोचक-चिंतक दिखाई पड़ते हैं, उनका संबंध

किसी-न-किसी रूप में 'आलोचना' पत्रिका से अवश्य रहा है। नामवर सिंह के संपादकीय विवेक का ही अवदान है, जिससे हिंदी आलोचना का वृहत्तर आयाम निर्मित हो सका। उन्होंने 'आलोचना' का संपादन करते हुए हिंदी आलोचना को विशुद्ध साहित्यिक क्षेत्र की सीमा से निकालकार उसे व्यापक सांस्कृतिक क्षेत्र में जोड़कर व्यापक आधार प्रदान करते हुए उसे 'सभ्यता-समीक्षा' का रूप दिया। कहना न होगा कि उन्होंने 'आलोचना' पत्रिका को गूढ़-गंभीर चिंतन युक्त सामग्री से ऐसे बौद्धिक वातावरण का निर्माण किया जो समस्त साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों को आलोचनात्मक होकर देख सके। इस प्रकार यह नामवर सिंह का आलोचनात्मक विवेक और संपादक-व्यक्तित्व की ही महत्त्वपूर्ण देन है जिसने कितने ही आलोचकों-पाठकों का आलोचनात्मक विवेक निर्मित किया और 'आलोचना' को हिंदी की आलोचनात्मक विवेक की पत्रिका के रूप में स्थापित किया। वह न केवल हिंदी की महती पत्रिका बनी बल्कि भारतीय साहित्य की परीक्षा करनेवाली एक अप्रतिम पत्रिका भी सिद्ध हुई। उसका स्थान इतिहास के हृदय में सुरक्षित है।